"बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम"

जुमअह का पैग़ाम मुसलमानों के नाम

करने के तीन काम और नहीं करने के तीन काम

अज़ हज़रत मोलाना सय्यद अबुलहसन अली नदवी
मदज़िल्लहुल आली

हज़रत मोलाना मदज़िल्लहुल आली ने यह तक़रीर २० फ़रवरी १९९२ ई. को तकया हज़रत शाह इलमुल्लाह साहब की मस्जिद में एक बड़े मजमे में की (मुख़्तसेरन ख़िदमत में पेश है)

www.abulhasanalinadwi.org

ख़ुतबए मसनूना के बाद :–

अऊज़ोबिल्लाहिमिनश्शैतानिर्रजीम ।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम ।

इन्नल्लाह यामुरु बिल अदले वल एहसान व ईताएज़िलकुरबा व यन्हा अनिल फ़हशाए वल मुनकरे वल बग़ाय । यएज़ुकुम लअल्लकुम तज़क्करून । (पारह १४, रुकुअ १९)

मतलब– बेशक अल्लाह तआला हुक्म करता है इन्साफ़ का और एहसान का और रिश्तेदारों को देने का और मना करता है बेहयाई के कामों से और नामाकूल बातों से और हद से आगे बढ़ने से अल्लाह तआला तुमको नसीहत करता है ताकि तुम नसीहत क़बूल करो ।

मेरे भाईयो, दोस्तों, अज़ीज़ों । अभी आपने ख़ुतबे के आख़िर में यह आयत सुनी है । जुमअह के ख़ुतबे में आम तौर पर यह आयत पढ़ी जाती है । यह जो ख़ुतबए मसनूनह है, मगर एक तो क़ायदा यह है कि जो चीज़ आदमी बराबर सुनता रहता है इसकी तरफ़ तवज्जह नहीं करता है । कान इसके आदी हो जाते हैं और इसकी तरफ़ ज़हन नहीं चलता । फ़िक्र नहीं होती है और दूसरी इससे बड़ी बात यह है कि हम में से अकसर भाई **अरबी** नहीं जानते हैं और यह आयत क़ुरआन शरीफ़ की है जो अरबी में नाज़िल हुआ है । इसलिए हम इस आयत की आपके सामने तशरीह करते हैं । यह आयत ऐसी है जो ख़ुतबे के आख़िर के लिए इन्तख़ाब की गई है कि अगर हम आप इस पर अमल करें, मुसलमान इस पर अमल करना शुरू कर दें तो **दीन के बहुत हिस्से पर अमल हो जाए और बहुत से गुनाहों से और ख़ुदा को नाराज़ करने के असबाब से ख़ुलासी हो जाए** और

www.abulhasanalinadwi.org

हमारा मआशरह दुरुस्त हो जाए। हमारे घरों की ज़िंदगी में मोहब्बत, मेल-मिलाप, खैर-ख़्वाही, दुआ गोई की एक फ़िज़ा पैदा हो जाए। हम आप गौर करेंगे इस आयत मे जिन चीज़ों के मुतअल्लिक़ कहा है कि यह तुमको करना चाहिए, अल्लाह तुमको यह हुक्म देता है फिर कहा अल्लाह तुम्हे इससे रोकता है यह वह चीज़े हैं अकसर हमसे और मुसलमानों से, अच्छे-अच्छे नमाज़ियों से कौताही होती है और दीन के अच्छे शौक़ीन लोगों मे भी इसमें कौताही (कमी) होती है इसमें बहुत क़ुसूर होता है, ऐसी चीज़े इसमें रखी गई हैं कि अगर इस पर अमल किया जाए तो पूरी ज़िन्दगी एक अच्छे साचें मे ढल कर निकले, इसमें बरकत भी हो रहमत आए और आपस में मोहब्बत भी हो और एक-दूसरे के साथ सही तअल्लुक़ हो। खैर-खुवाही का, वफ़ादारी का, दुआगोई का माहौल पैदा हो जाए और यह वह चीज़े हैं जिनमे अकसर चीज़ों को बहुत से लोग (अल्लाह मआफ़ करे) इसको मामूली समझकर ज़्यादा ख़ातिर में नहीं लाते और ज़्यादा इनकी अहमियत नहीं समझते। बड़ी-बड़ी चीज़ें जैसे कोई कहे, सलातुत्तस्बीह पढ़ो, अल्लाह हमें भी तौफ़ीक़ दे और आपको भी, तो इसको समझते हैं वाक़ई बड़ी इबादत है यह करना चाहिए या उमरह करना चाहिए या हज को जाना चाहिए जिसकी इसतिताअत (ताक़त) हो इसे जाना ही चाहिए और इसी तरह वज़ीफ़ह पूछते हैं, कोई वज़ीफ़ह बता दीजिए लेकिन यह चीज़ें जो रोज़ मर्राह की हैं और अमली चीज़ें हैं, ज़िंदगी की चीज़ें हैं इनकी तरफ़ कम तवज्जह की जाती है अगर हम अपना ज़रा जाइज़ह लें। अपना मुहासिबह करें और खुद अपने मोहतसिब बन जाएं और हम खुद फ़ैसलह करें कि हमें अभी तक यह करने का मौक़ा नहीं मिला, हमारी इस बारे में बड़ी ग़फ़लत रही, बड़ी चूक होती रही, अल्लाह तआला फ़रमाता है, अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

तआला इन्सान का मालिक है, ख़ालिक़ है, राज़िक़ है, पैदा करने वाला है और जो किसी चीज़ का बनाने वाला होता है तो वह उसके पुरज़े को ख़ूब समझता है। घड़ी के बनाने वाले से पूछिए कि इसका कौनसा पुर्ज़ा किस काम का है और कोई पुरज़ा अगर अपना काम करना छोड़ दे तो घड़ी बन्द हो जाए, और घड़ी किस चीज़ से ख़राब होती है और किस चीज़ से दुरुस्त यह घड़ी का बनाने वाला ज़्यादा समझता है। **अला यअलमो मन ख़लक़ व हुवल्लतीफ़ुल ख़बीर,** तो जो बनाता है क्या वही अपनी बनाई हुई चीज़ को न जानेगा, तो जिसने इन्सान को पैदा किया भला वही इन्सान को नहीं जानेगा। इन्सान किस चीज़ से ग़फ़लत का शिकार होता है इन्सान किस चीज़ से शैतान का निशाना बन जाता है वह अपने व नफ़्स का शिकार बन सकता है, वह चीज़ें क्या हैं अल्लाह सुबहानहू व तआला इरशाद फ़रमाता है—

इन्नल्लाह यामुरो बिल अदले वल अहसाने व ईताऐ ज़िल क़ुरबा, अद्ल के मानी इन्साफ़ के आते हैं, अल्लाह तआला हुक्म देता है इन्साफ़ करने का और देखिए इन्साफ़ के मुतअल्लिक़ कितनी कौताही होती है। इबादत करेंगे, ज़िक्र व तसबीह भी, पूछेंगे भी करेंगे भी, वअज़ सुनने भी जाएंगे और अल्लाह तआला तौफ़ीक़ देता है निफ़लें भी पढ़ते हैं, नेक काम भी करते हैं, लेकिन इन्साफ़ का जहां तक तअल्लुक़ है उसका जो हक़ है वह देना चाहिए। मां-बाप का जो हक़ है, वह उनको देना चाहिए, भाइयों का जो हक़ है वह उनको देना चाहिए, बहनों का जो हक़ है यहां तक कि तरकह में जो हक़ है वह उनको देना चाहिए और बीवी का जो हक़ है वह उसको देना चाहिए, औलाद का जो हक़ है वह उनको देना चाहिए, **तालीम व तरबियत का नेक रास्ता दिखाने का उनकी सेहत के ख़्याल**

www.abulhasanalinadwi.org

रखने का, इनकी ज़रुरियात मुहैया करने का, उनके लिए पौशाक बनाने का, यह नहीं कि ईद में ख़ूब धूम धाम से कपड़े बनाए और साल भर कोई फ़िक्र न हो । सर्दी, गर्मी के क़ाबिल कपड़े हैं या नहीं और उनकी हैसियत के मुताबिक़ कपड़े हैं या नहीं, सेहत का ख्याल रखना, बीमारियों से बचाना, तो अल्लाह तआला फ़रमाता है, अल्लाह तुमको हुक्म देता है इन्साफ़ करने का, अद्ल करने का, अद्ल के मअनी क्या हैं, जिसका जो हक़ है बराबर दिया जाए । मां-बाप का जो हक़ है मां-बाप को दिया जाए, बीवी बच्चों का जो हक़ है वह इनको दिया जाए । यह नहीं कि मां-बाप का जो हक़ है वह भी बीवी बच्चों को दे दिया जाए और बहनों का हक़ भी भाईयों को दे दिया जाए, बल्कि खुद ले लिया जाए, जायदाद में मिलकियत में और सब से बढ़कर तरकह और मीरास में और फिर कमाई जो अपनी है, इसमें बीवी का हक़ इसमें यह सब हुकूक़ हैं इन सब को समझना चाहिए और यही ज़रा मुश्किल काम है, बाक़ी यह वज़ीफ़ह पढ़ लेना, कुछ इबादत कर लेना, रात को जाग लेना यह आसान है, जो चीज़ अपने ख़िलाफ़ पड़ती है, जिसमें कुछ देना पड़ता है, वह मुश्किल है । जिसमें कुछ लेना-देना नहीं है, अल्लाह का ज़िक्र कर दिया, तसबीह पढ़ ली और वक्त सर्फ़ हुआ बहुत ज़्यादा, इससे ग़फ़लत नहीं बरतें, यह बड़ा मआमला जो है इन्साफ़ करने का है । अगर **हम इन्साफ़ करने लगें, हमारी ज़िंदगी बन जाए, शिकायतें रफ़अ (दूर) हो जाएं, कुदूरतें दूर हो जाएं, एक-दूसरे के ख़िलाफ़ जो साज़िशें होती हैं, मन्सूबे बनाए जाते हैं, बद्दुआएँ की जाती हैं, झूठी गवाहियां दी जाती हैं, जायदादों पर कब्ज़ा करने की कोशिश की जाती हैं** और कम अज़ कम इनसे शिकायत रहती है । यह सब दूर हो जाएं । खुद ही अपने को तोलना चाहिए, अपनी जांच पड़ताल करनी चाहिए,

www.abulhasanalinadwi.org

यह किसी दूसरे का काम नहीं है, अपना ही काम है। हम अद्ल करते हैं, इन्साफ़ करते हैं, मां-बाप के साथ इन्साफ़, बीवी-बच्चों के साथ इन्साफ़, अज़ीज़ों के साथ इन्साफ़, पड़ोसियों के साथ इन्साफ़, ज़विल हुक़ूक़ के साथ इन्साफ़, बिरादारी के साथ इन्साफ़, अल्लाह तआला फ़रमाता है, अल्लाह तुमको हुक्म करता है, अद्ल का, इन्साफ़ करने का, **'वल अहसान'** और नेकी करने का। इन्साफ़ करने के अलावा कुछ नेकी भी करनी चाहिए। किसी को खाना खिलावें, किसी के घर को ख़ुराक पहुंचावें।

तो अल्लाह इन्साफ़ का हुक्म देता है और अहसान का हुक्म देता है कि अहसान करो और हम में से बहुत से लोग वह हैं जिनको अहसान करने की नौबत बरसों नहीं आती कि हम सोचें हमने कितने दिन से अहसान नहीं किया, मालूम होगा बहुत दिन से नहीं किया और सब काम करते है, लेकिन जिसको अहसान कहते हैं कि किसी के साथ कुछ सुलूक कर दे, किसी के काम आ जाएं, किसी को कुछ ग़िजा (खाना) पहुंचा दें, किसी की दवा का इंतज़ाम कर दें, किसी बीमार के इलाज में थोड़ी ही सी मदद कर दें, यह सब अहसान में शामिल है। फिर यह कि घर वालों के साथ जो करना है, मां-बाप के साथ करना है, अल्लाह ने बड़ी ताकीद की है, मां-बाप के साथ बड़ा अच्छा सुलूक करो, **हूं भी न करो, उनकी बात का बुरी तरह से जवाब न दो और इन पर ग़ुस्सा न उतारो, किसी वक्त उनसे ग़ुस्से का इज़हार न करो।** और अगर तुम्हारे पास इस वक्त सुलूक करने को कुछ नहीं है तो इंतज़ार करो और उनसे अच्छे तरीक़े से अर्ज़ व मअरुज़ कर लो। (उनको अच्छे तरीके से समझा लो।)

'व ईताए ज़िल क़ुरबा' और क़राबतदारों को देने का हुक्म करता

www.abulhasanalinadwi.org

है (रिश्तेदारों को)। बहुत से लोग हैं सदक़ा ख़ैरात ख़ूब करते हैं, मदरसों और यतीम ख़ानों को ख़ूब देते हैं बड़ी ख़ुशी है और अल्लाह का फ़ज़्ल है कि यह मदरसे और यतीम ख़ाने आप ही लोगों की मदद व अआनत से चल रहे हैं, **मगर अपने अज़ीज़ों को देने का रिवाज बहुत कम है। इसको लोग नेकी ही नहीं समझते,** खाते कमाते हैं, क्या ज़रुरत है हर शख़्स अपने घर का ज़िम्मेदार है, अपना ज़िम्मेदार, बच्चों का ज़िम्मेदार है और कुछ उनसे छीनते थोड़ा हैं हम इनको कोई तकलीफ़ नहीं पहुंचाते हैं। लेकिन इतना काफ़ी नहीं है। अल्लाह तबारक तआला फ़रमाता है, '**वईताऐज़िल क़ुरबा**' अपने अज़ीज़ों और क़राबतदारों को देना चाहिए। कभी कोई हदया पहुंचा दिया, कोई अच्छी चीज़, घर में कोई अच्छा पकवान पका, इस ज़माने में तो यह रिवाज बहुत कम है कि किसी के घर तोहफ़ा भेजा जाए और **सहाबाएकिराम** के ज़माने में तो ऐसा था कि एक घर से तोहफ़ा गया दूसरे घर, उस घर वाले ने दूसरे घर को भेज दिया, इस घर वाले ने तीसरे घर को भेज दिया, आख़िर लौट कर फिर इसी घर में आ गया तो इस का रिवाज भी इस ज़माने में बहुत कम हो गया। तो इन सब चीज़ों का नमूना हमारे सामने नहीं रहा जो नमूने वाले लोग थे, वह दुनिया में तो है नहीं और अब तो लोग ज़ाबता और फ़र्ज़ को जानते हैं कि यह बताइये कि इसके न करने से गुनाह है या इसके करने से गुनाह है। बस हम गुनाह से बचेंगे, अहसान करना, अज़ीज़ों क़राबतदारों (रिश्तेदारों) को देना यह सबक़ ही भूल गए हैं और हम में हर एक "**बलिल इंसानों अला नफ़सेही बसीरह वलो अलक़ा मआज़ीरह**" हर इसान अपना ख़ुद निगाहबान है ख़ुवाह कितना ही उज़र करे, वह ख़ुद फ़ैसला कर सकता है, हर शख़्स अपनी ख़ुद अदालत है। अपना मुक़दमा अपनी अदालत में क़ायम करे और देखे कि

www.abulhasanalinadwi.org

हमने अपने अज़ीज़ों के साथ अपने रिश्तेदारों के साथ, कब से सुलूक नहीं किया इसका भी रिवाज होना चाहिए।

और यह भी सुन लीजिए इसके साथ-साथ परहेज़ की बात भी, **'व यन्हा अनिल फ़हशाए वल मुनकरे' वल बग़य** और रोकता है बेहयाई के कामों से और मुनकर, ना माक़ूल चीज़ों से जो दिल को बुरी लगती है। शरह के ख़िलाफ़, इन्साफ़ के ख़िलाफ़ है। इन चीजों से बचये कि सख़्त लफ्ज़ कह दिया, गाली दे दी, तोहमत लगा दी, और तोहमत लगाना तो बहुत बड़ा गुनाह है। लेकिन और किसी तरीक़े से झिड़क दिया यह भी मुनकर है और जो भी चीज़ अल्लाह के क़ानून के ख़िलाफ़ हो वह भी मुनकर है।

'वलबग़य' और ज्यादती करने से भी, बाज़ लोगों का मिज़ाज होता है कि जो काम करेंगे बढ़-चढ़ कर और उसकी हद से भी आगे बढ़ जावेंगे, करेंगे नहीं और करेंगे तो ४ गुना, दस गुना ज्यादह। यह नहीं एतदाल से काम लें, बस जितनी ज़रुरत है उस वक्त उतना ही करें। कुछ और करेंगे उसका सवाब मिलेगा, लेकिन हुदूद से तजावुज नहीं करना चाहिए। हुदूद से तजावुज़ भी हम लोगों का एक मर्ज़ हो गया है कि मुसलमान इससे पहचाने जाने लगा है कि दूसरी क़ौमों के लोग करेंगे तो ठंडे-ठंडे और हुदूद के अंदर रहकर। मुसलमान जब करेगा तो बस रिकार्ड ही तोड़ना चाहेगा कि धूम मच जाए और यह मुसलमान देखो कितना ख़र्च कर दिया, घर लुटा दिया, सारे मोहल्ले को खिला दिया, और जो करने का वक्त है, ज़रुरत का वक्त है उस वक्त बैठे हैं कि कोई करे, अल्लाह का बंदा। और जब करते हैं तो हद से तजावुज़ कर के। हुदूद मुक़र्रर हैं। अल्लाह के हुदूद से तजावुज़